नामांक Roll No.

No. of Questions — 14

No. of Printed Pages — 7

SS—26–Raj. Sah.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2015
SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2015

राजस्थानी साहित्य
(RAJASTHANI SAHITYA)

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों सारू सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सबसूं पैली आपरै प्रस्न पत्र माथै नामांक जरूर लिखे ।

(2) **सगला** सवाल करना जरूरी है ।

(3) हरेक सवाल रौ पड़ूत्तर उत्तर पुस्तिका में ईज लिखणो है ।

(4) जिण सवाल रा अेक सूं अधिक भाग है तो वां सगळा रा उत्तर अेक साथै लगातार लिखौ ।

(5) लेखन मांय सुद्धता अर वैज्ञानिक विवेचन करियां ज्यादा अंक दिरीजैला ।

(6) वर्तनी, व्याकरण अर सुलेख रौ विसेस ध्यान राखौ अर ओपतौ पड़ूत्तर देवौ ।

(7) उत्तर राजस्थानी भासा में ईज देवणा है ।

(8) पूर्णांक अर प्रस्नांक ठावी ढौड़ अंकित है ।

1. नीचै लिख्या गद्यावतरणां री सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) शहर री अेक सांकड़ी गळी में अेक आंधै-सै ओरियै में अेक बेवा पींजारी बरस पचास-पिचपनेक री अर बींरो बेटो हुसैनियो बरस तेरह-चवदैक रौ बसै । ऊमर सूं तो बाइसी डोकरी नीं हुई पण रोग भूख अर अणगिण चिंतावा बीनैं बेरहमी सूं कूट-कूट बींरा जीवण पान झड़का वींनै अकाल में ई ढंखर कर दी । धांसी आवै अर लोही शरीर में खासो भलो सूकग्यो । चामड़ी चुस'र पींजरै रै चिपगी । सूखो-पाको साम्हों आवै जिसो पेट में नांखले, नई तो अल्ला-अल्ला खैर सल्ला, बैठी मांख्यां उड़ावै अर मौत नै उडीकै । 4

अथवा

टाबर पढै अर नौकरी लाग ज्यावै, अफसर बण ज्यावै, परिवार बढण लागग्या, गांवां में ज्यान आवण लागगी, घर सुधरण लागग्या । घर सुधरै, परिवार सुधरै तो समाज सुधरै, देस सुधरै । फैर स्वामी जी रौ तो हौंसलो बधण लागग्यो । स्वामी जी कनै आदमी बणाणै री कला है, लोगां रौ जी जमग्यो, अबै लोग स्वामी जी नै आदमी सूं ऊपर मानण लागग्या, अबै स्वामी जी जठै भी जांवता, धन री बिरखा होवण लाग ज्यांवती । 4

(ख) गंगा तलाब री सीढ़ियां पर बैठ्या लोग जिण भावनां सूं आपरा बडैरा री अस्थियां नै विसरजित कर रह्या हा वांनै देख'र म्हनै हरद्वार री हर री पैड़ी याद आगी, अठै बी लोग आपणा दिवंगत लोगां रा अस्थि पुष्प लेर गंगा में विसर्जित करबा तांई हरद्वार जावै । आस्था अर बिस्वास रौ अनूठौ संगम देख'र म्है भाव विभोर हुयग्यो । धन है भारत भूमि ! धन है अठा रा लोग ! अर धन है अठा रा रीति रिवाज । बरसां पैली अठां सूं गियोड़ा लोगां रे सागै अठारी आस्था, विस्वास, मानता आज भी अठारा मूल लोगां रै मन मांय ज्यूं री त्यूं बसी है । 4

अथवा

साहित्य में आनंद ही उपदेश और उपदेश ही आनंद बण जावै, आनंद और उपदेश में कोई अंतर नहीं रह जावै । आनंद अर उपदेश रौ ओ अद्वैत ही साहित्य रौ प्रयोजन है । साचो साहित्य मन नै आप में रमायनै जीवण नै उदात्ततारी दिशा में अग्रसर करै । बो जीवण में आनंद भरै, उल्लास भरै, सजीवता भरै । उण में भोग है, जठै कर्म भी है । उण में सत्य है, चैतन्य है, आनंद है । बो सत्य है, बो शिव है, बो सुंदर है । बो सत्य और ज्ञान रूप अनन्त ब्रह्म रौ रूप है । 4

(ग) ईश्वर री लीला रो कईं पार नीं, अपरम्पार है । जठै दांत है बठै चणा कोनी अर जठै चणा है बठै दांत कोनी । जिकी बातां री संका मूलकी मासी नैं खैती, सूरजड़ी रै हियै हबूकड़ो उठा देवती, माधै है खिल्योड़े उणियारै नै कुम्हेला देवती, बै बातां सांप्रतेक दीखण लागली । इण बात रो परमाण भी मिलण लागग्यो कै भानो अूंधै रस्तै बढ़ग्यो है । बो रिण सूं खूब दब्योड़ो है । बो दारू बेसी पीवण लाग्यो है । 4

अथवा

लाचार हूँ । तूं नीं जाणै कै हूं अठै कित्तो फंदै में पड़ग्यो हूँ । ..... करज ई करज गिरी तो मारण ताईं री धमकी दे दी है । दोसै रा पांचसो लिखा लिया है । बेसी समझावूं अर भरोसो दूं तो कैवै .... थारी लुगाई नै म्हारै कनै भेज दे । आज म्हैं बीं रो गलो झाल लियो । अैड़ी हालत में कियां रह सकूंला । मनै जाणो ई पड़ैलो, नीं तो लोग मनैं बड़ै घर भेज दे वैला या भो भरो फोड़ देला । 4

2. 'अकल री वात' कहाणी में बुद्धि रौ चमत्कार अर महत्व दरसायौ गयौ है, इण कथन नै समझा'र लिखो । 4

3. 'गांव रा मास्टर जी', कहाणी मास्टर जी रै आरथिक संघर्ष री गाथा है, कहाणी रै कथानक रै पांण इण कथन नै सिद्ध करौ । 4

4. 'दुनिया भर नै मढौ पण पहल्यां अपणै आपनै गढो' इण कथन मांय निबंधकार रा कांई विचार है ? 4

5. ''हूं गोरी किण पीव री'' उपन्यास में भाना अर माधा मांय सूं किण ने नायक रूप में स्वीकार करो । तर्क रै साथै जबाब दो । 4

6. आधुनिक राजस्थानी निबंध माथै आलेख लिखो । 6

7. नीचै लिख्या विसयां मांय सूं किणी अेक विसय माथै राजस्थानी भासा में निबंध लिखौ — 6

(i) राजस्थानी तीज त्यूंहार

(ii) शिक्षा रौ मौलिक अधिकार

(iii) विद्यालय रौ वार्षिकोत्सव

(iv) आजादी रौ उच्छब (15 अगस्त) ।

8. नीचै लिख्यां पद्यांसां री सप्रसंग व्याख्या करो :

(अ) नरग पड़इ का बापड़ा, कांह लगाड़इ खोड़ि ।

रावण हुयो कुसीलियो, कहिस्यइं कवियण कोड़ि ॥

कां तूं परणी आपणी, छोडि कुलीनी नारि ।

परणी बांछइ पारकी, मूरख हियइ विचारि ॥ 5

अथवा

नंह पड़ोस कायर नरां, हेली ! वास सुहाय ।

बलिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल बिकाय ॥

ढोल सुणंतां मंगली, मूंछा भूंह चढंत ।

चंवरी-में पीछाणियो, कंवरी मरणो कंत ॥

(ब) इण में हाड़ी ललकार करी, जद आंतड़ियां परनाली ही ।

मुरधर री बागडोर, इण में ही, दुरगादास संभाली ही ॥

इण में प्रताप रौ प्रण गूंज्यौ, जद भेंट करी भामासा है ।

सतवादी घणा सपूतां री, आ राजस्थानी भाषा है ॥ 5

अथवा

दौड़ा-दौड़ मचाता साबा

मंदरा-मंदरा तपता आबा

काची महकी बेच ठगोरी, कतनी बार मरूं ?

म्हूं कतनी बार मरूं ?

9. सांयाजी झूलारी काव्य कृति ''नागदमण'' रौ कथासार आपरै सबदां में लिखो । 5

10. राजिया रा सोरठा वर्तमान समय रै यथार्थ री नीति रौ खरो चित्रण है, स्पष्ट करो । 5

11. संकरदान सामौर साचा अरथां में अेक निरभीक राष्ट्रीय कवि हा, समझावो । 5

12. काव्य री परिभाषा देवतां थकां उण रौ प्रयोजन समझावौ । 5

13. त्रोटक छंद री परिभासा देवतां थकां उदाहरण देवौ । 5

14. रूपक अलंकार री परिभासा दाखला देय'र समझावौ । 5